डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

सा.अ. 16 / 14

30 सितंबर 2020

प्रेस विज्ञप्ति

# अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस 2020

भारत की प्रमुख साहित्यिक संस्था साहित्य अकादेमी ने अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस के अवसर पर बुधवार, 30 सितंबर 2020 को "ज्ञान अर्जन में अनुवाद की भूमिका" विषय पर ऑनलाइन परिचर्चा का आयोजन किया। अकादेमी प्रत्येक वर्ष अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस के अवसर पर विभिन्न शहरों में साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन करती है, किंतु इस वर्ष कोरोना महामारी के कारण अकादेमी ने ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया। प्रख्यात शिक्षाविदों, विद्वानों तथा अनुवादकों यथा – डॉ. विक्रम के. दास, प्रो. सुरभि बनर्जी, सुश्री मिनी कृष्णन, प्रो. देवशंकर नवीन, प्रो. दीपक कुमार शर्मा तथा सुश्री सुवाश्री कृष्णास्वामी ने परिचर्चा में भाग लिया। डॉ. विक्रम दास ने कहा कि जब सहज ज्ञान की बात आती है तो अनुवाद नए मार्ग प्रशस्त करता है तथा किसी को भी उसकी सांस्कृतिक जड़ों की खोज करने में सहायता प्रदान करता है, लेकिन वैज्ञानिक ज्ञान के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता। प्रो. सुरभि बनर्जी ने कहा कि अनुवाद की ज्ञान अर्जन में अहम भूमिका होती है। लेकिन अनुवाद की तरह ज्ञान एक बहुस्तरीय अवधारणा है। सुश्री मिनी कृष्णन ने कहा कि संस्कृतियों का संपर्क हमेशा परिवर्तन और प्रगति लाता है तथा अनुवाद संस्कृति सहित विभिन्न क्षेत्रों में बदलाव की भूमिका निभाता रहा है और भविष्य में भी निभाता रहेगा। प्रो. देव शंकर नवीन ने कहा कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए अनुवाद का रास्ता कई प्रकार का होता है तथा भारत जैसे बहुभाषी समाज में अनुवाद की एक विशेष भूमिका होती है जिसे हम वैदिक काल से वर्तमान काल तक देख सकते हैं। उन्होंने कहा कि अगर आज हम तमिळ या तेलुगु या बांग्ला का साहित्य आसानी से पढ़ सकते हैं तथा विभिन्न संस्कृतियों तथा साहित्यों के बारे में जान सकते हैं, तो यह केवल अनुवाद के माध्यम से ही संभव हुआ है। प्रो. दीपक कुमार शर्मा ने कहा कि वह पूर्वोत्तर से हैं जहाँ लगभग 272 भाषाएँ हैं तथा ऐसे समाज में अनुवाद ज्ञान की समझ एवं प्रसार में अहम भूमिका निभाता है। आगे उन्होंने कहा कि अनुवाद हमें हमारे अतीत को समझने तथा उसको पुनर्मूल्यांकित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सुश्री सुवाश्री कृष्णास्वामी ने कहा कि अनुवाद वह संगम है, जहाँ संस्कृतियाँ आपस में मिलती हैं और एक संस्कृति, दूसरी संस्कृति में अपनी राह बनाती है। चर्चा में संस्कृति की अनुवादनीयता, उसकी सुगमता, मूल के प्रति निष्ठा, शैक्षिक और बाल साहित्य आदि में अनुवाद की भूमिका पर गहन विचार–विमर्श किया गया। समस्त प्रतिभागियों ने अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस के अवसर पर प्रत्येक वर्ष श्रेष्ठ साहित्यिक कार्यक्रमों के आयोजन के लिए साहित्य अकादेमी का आभार प्रकट किया।

(के. श्रीनिवासराव)